The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-1, April-2023
www.theresearchdialogue.com

मूल्यपरक शिक्षा

धीरज कुमार वर्मा
शोध अध्येता
डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
अयोध्या (उत्तर प्रदेश)
dhirajve425@gmail.com

डॉ अखिलेश
असिस्टेंट प्रोफेसर
अध्यापक शिक्षा विभाग, रामनगर पीजी कॉलेज
रामनगर बाराबंकी (उत्तर प्रदेश)

सारांश :-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका सामाजीकरण समाज के विश्वासों आदर्शों और सिद्धान्तों और सामाजिक मानदण्डों से निर्धारित होता है ।समाजीकरण की प्रक्रिया ही उसे अन्य जीवों से पृथक करती है। समाज के नियम आदर्श अथवा मानदण्ड जब व्यक्ति अंतः करण से अथवा विश्वास के रूप में स्वीकार करता है, तो इन्हें मूल्य की संज्ञा दी जाती है। मूल्य की अवधारणा मनुष्य के प्रत्येक चुनाव, निश्चय ,निर्णय तथा कार्य में विद्यमान होती है। प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन अपने जीवन में किसी व्यक्ति ,वस्तु आदि के बारे में विभिन्न उद्देश्यों को आधार मानकर निर्णय लेता है कि क्या सही है, क्या गलत ,इन्हीं निर्णय में व्यक्ति के मूल्य की अवधारणा छिपी होती है।

प्रस्तावना :

मूल्य का शाब्दिक अर्थ है - उपयोगिता, वांछनीयता और महत्व । किसी समाज में जिन आदर्शों को महत्व दिया जाता है और जिनसे उस समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित तथा नियंत्रित होता है ,उन्हें उस समाज के मूल्य कहते हैं। प्रश्न यह है कि शिक्षा संस्थानों में बालकों को किन मूल्यों का ज्ञान कराया

जाए, क्योंकि भारतीय समाज में विभिन्नता के दर्शन होते हैं, और भारत में विभिन्न धर्मों एवं जातियों के लोग रहते हैं। वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार भारत में उन सभी मूल्यों को स्थान देना चाहिए, जिनसे युवा वर्ग आपस में मिलजुल कर कार्य करने, रचनात्मकता का विकास, सहयोग, राजनीतिक संवेदनशीलता तथा संगठनात्मक दक्षता के गुणों का विकास कर सकें।

प्रस्तुत शोध पत्र में मूल्य शिक्षा का विश्लेषण किया गया है। इसमें मूल्य का अर्थ ,मूल्यों की उपयोगिता ,शिक्षा में मूल्यों की आवश्यकता को सम्मिलित किया गया है। मूल्य की अवधारणा मनुष्य के प्रत्येक चुनाव, निश्चय ,निर्णय तथा कार्य में विद्यमान है। जब हमें दो मनोरथों में चुनाव करना होता है तो उस मनोरथ को प्राप्त करने का निश्चय करते हैं जो अधिक श्रेष्ठ है और इसी निर्णय के अनुसार जीवन में कार्य करते हैं इस चुनाव निर्णय तथा निश्चय में उन वस्तुओं या मनोरथ हों के मूल्य की अवधारणा छिपी है । प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में प्रतिदिन ऐसे निर्णय करता है ।यह निर्णय उसे हर कदम पर करने पड़ते हैं,अन्यथा उसके लिए कार्य करना असंभव हो जाएगा। वह एक वस्तु को पसंद करता है, दूसरे को नापसंद, एक की प्रशंसा करता है, दूसरे की निंदा करता है, एक कार्य को शुभ मानता है, और दूसरे को अशुभ मानता है, एक दृश्य को सुंदर और दूसरे को असुंदर। यह सारे निर्णय मूल्य की अवधारणा पर आधारित है।

मूल्य का अर्थ एवं परिभाषा :

मूल्य क्या है? मूल्य वह है, जो मानव इच्छा को पूरा करता है। मानव इच्छाओं की पूर्ति क्यों आवश्यक है? जीवित रहने के लिए इच्छाएं पूरी करनी पड़ती हैं। हम जीवित क्यों रहना चाहते हैं ? जीवन के कुछ लक्ष्य या उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हम जीते हैं। एक व्यक्ति कहता है कि वह कला की साधना के लिए तो दूसरा सत्य की खोज के लिए जीवित रहना चाहता है। इसी तरह सत्य, सत्य के लिए ,भलाई ,भलाई के लिए, कर्तव्य, कर्तव्य के लिए तथा ईश्वर, ईश्वर के लिए है। इस तरह हम ऐसे मूल्यों की अवधारणा पर पहुंच जाते हैं जिनसे मनुष्य के उद्देश्यों की प्राप्ति होती है।

मूल्य शब्द अंग्रेजी के Value शब्द का समानार्थी है, यह लैटिन भाषा के Valere से बना है इसका अर्थ है, योग्यता या महत्व। संस्कृत भाषा में इसे ईष्ट कहा जाता है, ईष्ट का अर्थ है-" वह जो इच्छित है।"

आर के मुखर्जी के शब्दों में-" मूल्यों को सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य उन इच्छाओं तथा लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिन्हें अनुबंधन ,अधिगम या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा

आभ्यन्तरीकृत किया जाता है तथा जो आत्म निष्ठ प्राथमिकताओं, मानको तथा आकांक्षाओं का रूप ग्रहण कर लेते हैं।"

आलपोर्ट के शब्दों में -"मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है"।

फ्लिंक के अनुसार-" मूल्य मानक रूपी मानदंड हैं जिनके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया विकल्पों में से चयन करने में प्रभावित होते हैं।"

अर्बन के शब्दों में-" मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करे।"

मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता :

आज भौतिक समृद्धि को सुख-दुख, मान -सम्मान का आधार माना जाता है और व्यक्तियों के लिए भौतिक सुख समृद्धि ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। यही कारण है कि आज एक अयोग्य व्यक्ति जिस पद के योग्य नहीं है ,वह उसे किसी भी कीमत में प्राप्त करना चाहता है चाहे उसके लिए कुछ भी करना पड़े आज इसी प्रकार के लोग समाज में सम्मानित हैं जिसके फलस्वरूप मनुष्य के लिए मानवता की जगह भौतिकता आदर्श बन गई है। जिसका नकारात्मक परिणाम संपूर्ण मानव सभ्यता एवं संस्कृति के ऊपर स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है।

वर्तमान में आर्थिक एवं तकनीकी रूप से समृद्ध देश विकसित देश कहे जाते हैं ,चाहे वहां के नागरिक के आचार विचार ,लोक व्यवहार ,मूल्यों आदि में कितनी ही गिरावट क्यों ना आई हो। क्या ऐसे देश सही अर्थों में एक सभ्य और विकसित देश कहे जा सकते हैं ?

भविष्य में मानव की मान्यताएं, धारणाएं इतनी बदल जाएंगी इसकी कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी। एन०सी०एफ०-2005 ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि प्रोफेशनलिज्म लोगों को संवेदनहीन बना रहा है, जैसे- जैसे लोगों में जागरूकता बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे उनकी क्रूरता भी बढ़ती जा रही है।

आज मूल्यपरक अवधारणा में बदलाव आ रहा है। आधुनिक भारतीय समाज का स्वरूप प्राचीन भारतीय समाज से कई अर्थों में भिन्न दिखाई पड़ता है ।पुराने भारतीय मूल्य लुप्त हो रहे हैं ।हमने

आध्यात्मिकता के महत्व को नकारा है और पाश्चात्य जगत के जीवन मूल्यों को अपनाते जा रहे हैं।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री ग्रेशम का नियम है कि "खोटा सिक्का अच्छे सिक्के को चलन से बाहर कर देता है।" हमारे आध्यात्मिक मूल्यों पर ग्रेशम का नियम पूरी तरह से लागू होता है। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है कि मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ है, नष्ट नहीं हुए । आज भी भारतीय संस्कृति जीवित है, अभी भी मानव - मानव के बीच रागात्मक सम्बन्ध है।

वर्तमान में हम इस परिवर्तन को अस्वीकार नहीं कर सकते ।इस अमानवीय बदलाव को केवल मूल्यों के द्वारा परिवर्तित किया जा सकता है। जिसका सतत प्रयास सदियों से ही कुछ लोगों के द्वारा किया जाता रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप आज चारों ओर से एक ध्वनि सुनाई पड़ती है कि अब "नैतिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों के बिना नहीं चलेगा काम।"

मूल्यपरक शिक्षा की मांग आज सर्वत्र सुनाई पड़ रही है। शिक्षाविद् ,विधिवेत्ता ,समाज सुधारक एवं राजनेता सभी यह महसूस कर रहे हैं कि मूल्यों का क्षरण हो रहा है। आज संपूर्ण मानव समाज भयभीत है। बुद्ध, विवेकानंद और गांधी आदि की यह भारत भूमि आंतरिक कलह, सांप्रदायिकता, वर्ग विभेद, आर्थिक विषमता और जातिवादी संकीर्णता की लपटों में जल रही है।नूतन और पुरातन का संघर्ष ,महानगरों की आपाधापी, आधुनिकीकरण एवं अभावों का विस्फोटक मिलन, लोकतांत्रिक, राजनीतिक मूल्यों का क्षरण और अन्त:कलह से संपूर्ण मानव समाज अशांत ,त्रस्त, शोषित एवं भयभीत है। जब भारतीय समाज पतन के गर्भ में जा रहा है उस समय शिक्षा संस्थाओं में मूल्यपरक शिक्षा की अनिवार्यता बरबस हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। परन्तु मूल्यपरक शिक्षा लच्छेदार भाषण देने से या कक्षाओं में बैठकर योजना बनाने से संभव नहीं होगी। मूल्यपरक शिक्षा की पृष्ठभूमि में तो कर्तव्य परायणता, त्याग, सहयोग, सहनशीलता, विनम्रता और क्षमता आदि गुणों की आवश्यकता होती है। व्यक्ति अपने दैनिक व्यवहारिक जीवन में इन गुणों का अनुपालन करें। इसके लिए व्यक्ति स्वयं, अभिभावक,परिवार, समुदाय, और शिक्षा संस्थाएं अपने -अपने स्तर पर सतत प्रयास करें। मूल्यपरक शिक्षा का क्षेत्र असीमित है, इसका कोई सुनिश्चित पाठ्यक्रम नहीं हो सकता, इसके लिए शिक्षण की कोई अवधि और समय सीमा संभव नहीं हो सकती, यह अनवरत प्रक्रिया है, व्यक्ति जीवन पर्यंत इसे सीखता है। मूल्यपरक शिक्षा सैद्धांतिक कम व्यवहारिक अधिक होती है। यद्यपि मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता किसी एक विशेष या वर्ग विशेष तक सीमित नहीं होती। इसलिए मूल्यपरक शिक्षा की सर्वाधिक आवश्यकता शैशवावस्था में ही प्रारंभ हो जाती है।

जीवन मूल्यों की शिक्षा मात्र तत्वों की जानकारी देना, कथा कहानी और संस्मरणों को सुनाना या प्रवचन देना मात्र नहीं बल्कि नीतिपरक ज्ञान को अपने आचरण एवं व्यवहार में उतारना है। जीवन मूल्यों की शिक्षा का प्रारंभ घर से ही होना चाहिए। आधुनिक सामाजिक परिवेश की विसंगतियों एवं भौतिकवादी प्रवृत्तियों के कारण आज बालक घर से ही कुसंस्कारित होकर शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश ले रहा है। शिक्षा संस्थाओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वह मूल्यपरक तत्वों से बालक के जीवन को पूरित करें, जिससे वह एक सुयोग्य नागरिक बनकर समाज एवं राष्ट्र का कल्याण करें। इस कार्य में शिक्षा व्यवस्था,शिक्षा संस्थाओं का परिवेश और शिक्षक की भूमिका अहम होती है। वास्तव में मूल्यपरक शिक्षा का रूप यह नहीं होना चाहिए कि "बालक में बुराई आ गई है अतः उसे अब सुधारा जाए,बल्कि आवश्यकता यह है कि बालक बुराई में फंसे ही नही।" जीवन मूल्य वह अवधारणा है जो व्यक्ति की भलाई या उन्नति के लिए किसी वस्तु या क्रिया की वांछनीयता को प्रकट करता है।

आज भी हम एक शिक्षित व्यक्ति से यही आशा करते हैं कि उसमें ज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण ,कार्य के प्रति सही रवैया, जागरूकता,सहयोग, करुणा, उदारता और अनुशासन हो। ये वे लक्षण है जिनकी एक शिक्षित व्यक्ति से आशा की जाती है।शैक्षिक जीवन में अर्जित मूल्य ही शिक्षित व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों में सबसे महत्वपूर्ण होते हैं।

प्रश्न यह है कि शिक्षा संस्थाओं में बालकों को किन मूल्यों का ज्ञान कराया जाए । जहां भारतीय समाज में विभिन्नता के दर्शन होते हैं। यहां बहुधर्मी और बहुभाषी जातियों के लोग रहते हैं। हिंदुओं में भी कई जातियां हैं, जिनका खान-पान, पहनावा, पूजा-अर्चना भी एक दूसरे से भिन्न है। यद्यपि भारत में सदैव से विभिन्नता में एकता रही है जो भारत की पहचान है। भारतीय संस्कृत में सभी धर्मों और उनके अनुयायियों को समान महत्व दिया गया है। हमारे यहां चार पुरुषार्थ धर्म अर्थ काम और मोक्ष बताए गए हैं जो आध्यात्मिक मूल्यों के अंतर्गत आते हैं, वही प्रेम दया सहानुभूति सहयोग और राष्ट्रप्रेम जैसे मूल्य भौतिक मूल्यों के अंतर्गत आते हैं।

सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से भारत लोकतांत्रिक देश है। यहां पर सभी धर्म, जाति, लिंग और वर्ग में जन्मे लोगों में कोई भेद नहीं है और उसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में स्वतंत्रता एवं समानता प्राप्त है। हमारा लोकतंत्र न्याय, स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता पर आधारित है। यही हमारे राष्ट्रीय मूल्य है। इन्हीं मूल्यों को अपने जीवन में उतारना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। एनसीईआरटी ने भी 83 जीवन मूल्य को बताया है। भारतीय विविधता को देखते हुए गांधी जी ने भी सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य,

अस्वाद, अभय, अस्पृश्यता निवारण, शारीरिक श्रम, सर्वधर्म समभाव, और विनम्रता जो एकादश व्रत है उन्हें जीवन मूल्यों के रूप में स्वीकार किया है।

उपसंहार :-

वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप आज मानव वादी दर्शन विकसित करने की आवश्यकता है। यह मानवीय मूल्यों को एक नवीन रूप प्रदान करता है। वास्तव में जीवन मूल्यों का विकास मानवीय सम्बन्धो के फल स्वरुप होता है ।वर्तमान में मनुष्य प्रगति की नवीन आशा तथा पुरुषार्थ के साथ-साथ भविष्य का निर्माण करने में लगा है। विज्ञान ने हमें जो उपकरण दिए हैं, उनके सदुपयोग से मानववाद इस पृथ्वी पर सुख और शांति में जीवन का निर्माण करना चाहता है और यांत्रिक मूल्यों को मानवीय स्पर्श देकर आध्यात्मिक बनाना चाहता है। मानववादी शिक्षा का उद्देश्य से मनुष्य का निर्माण करना है जिसका व्यक्तित्व स्वतंत्र, तर्कपूर्ण तथा संतुलित हो। जो लोकतंत्र की प्रक्रिया में सक्रिय भाग ले सके। अतः आज के संदर्भ में शिक्षा में उन सभी मूल्यों को स्थान देना होगा जो युवा वर्ग में मिलजुल कर कार्य करने, पारस्परिक सर्जनात्मकता, संघर्ष निवारण ,आदान-प्रदान, सहयोग, विचार संप्रेषण, राजनीतिक संवेदनशीलता, तथा संगठनात्मक दक्षता के गुणों का विकास करते हों।

सन्दर्भ :-

1- लाल, रमन बिहारी, (2013-14)शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ

2- सक्सेना, एन० आर० स्वरूप और संजय कुमार, (2016) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, आर लाल बुक डिपो, मेरठ

3-सारस्वत, मालती और एस०एल०गौतम, शिक्षा का विकास एवं सामायिक समस्या, आलोक प्रकाशन, लखनऊ

4- मौर्य, अरविंद कुमार (2012), आदिवासी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के जीवन मूल्य, दायित्व बोध एवं समायोजन का अध्ययन, पी-एच०डी० थिसिस, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

5- त्यागी, गुरुसरन दास और विजय कुमार नंद (2014-15), उदीयमान भारत में शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

6- सिंह, रामपाल और उमा सिंह(2013-14), शिक्षा तथा उदीयमान भारतीय समाज, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

7- त्रिपाठी, नरेश चंद्र और विश्वनाथ बिहारी लाल (2013-14), शिक्षा के नूतन आयाम, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

THE RESEARCH DIALOGUE
Manifestation Of Perfection

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-1, April-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-April-2023/30

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

धीरज कुमार वर्मा एवं डॉ अखिलेश

for publication of research paper title

मूल्यपरक शिक्षा

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-01, Month April, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com